प्रकाशनार्थ।

02 अक्टूबर ,2023

युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 54 वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 9वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक श्रीमद्भागवत कथा के समापन के अवसर पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री गोरक्षपीठाधीश्वर परमपूज्य महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने कहा कि इस साप्ताहिक ज्ञान यज्ञ के प्रथम दिवस और आज समापन दिवस में रहने का सौभाग्य मुझे मिला है । इस कथा ज्ञान यज्ञ में सातों दिन पूरी तन्मयता के साथ आप सभी ने कथा का श्रवण किया। यह निश्चित ही जीवन में कुछ अच्छे परिवर्तन का कारण बनेगा । जिनकी सोच ही संकुचित है वह विराटता का दर्शन नहीं कर सकते है। धर्म एक ही है वह है सनातन धर्म, बाकी सब संप्रदाय और उपासना पद्धति है । यह सनातन धर्म मानता का धर्म है यदि सनातन धर्म पर आघात होगा ,तो विश्व की मानवता पर संकट आ जाएगा। हम सभी भारतवासियों को गौरव की अनुभूति करनी चाहिए कि हमे भारत में जन्म मिला है क्योंकि भारत में जन्म लेना दुर्लभ है और उसमें भी मनुष्य की शरीर पाना और भी दुर्लभ है। यह भागवत कथा तो अपरिमित है इसे दिन वा घंटो में बांधा नहीं जा सकता है। यह कथा सनातन रूप से प्रवाहित होती रहेगी और हम सभी श्रद्धालु भागवत रस का जीवन में पान करते रहे हैं । व्यासपीठ से कथाव्यास वृंदावन मथुरा से पधारे भागवत भास्कर श्री कृष्णचंद्र शास्त्री "ठाकुर जी" ने कहा कि परमात्मा का किसी भी दशा में किसी भी प्रकार से कोई की परिवर्तन नहीं होता है। वह अव्यय है, अविनाशी है, नित्य है। वह सभी परिस्थितियों में सच्चिदानन्द स्वरूप रहते है। भगवान श्रीकृष्ण जब तक व्रज में रहे तब तक पांव मे चप्पल नहीं पहने, उनका संकल्प था कि जब तक हमारे राष्ट्र के प्रत्येक जन के पैर में चप्पल न हो जाय, तब तक मैं स्वयं भी चप्पल नहीं पहनूंगा। वे जब तक ब्रज में रहे हे तब तक अपने केश नहीं करवाये, उनका संकल्प था जब तक कंस के डर से भयभीत लोगों का भय नही हर लूंगा तबतक अपना केश नही करवाऊँगा ।

कथा व्यास ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने अपने मुकुट पर मोर का पंख इसलिए धारण किया कि दुनिया में मोर ही ऐसा जीव है जो काम त्यागी है। उसके अन्दर काम भावना का प्रवेश नही होता। इस मोर पंख से भगवान विश्व के मानवों को सन्देश देते है कि जो काम भावना का त्याग करता है वह मुझे अत्यन्त प्रिय होता है।

उद्धव जी भगवान् के प्रिय सखा है, जो बाल्यकाल से ही भगवान की प्रतिभाओं के साथ लीला करते हैं। उद्धव ज्ञानी होने के साथ ही परम भक्त हैं। जिसके अन्दर ज्ञान होता है उसके अन्दर अभिमान हो ही नहीं सकता। अगर हृदय में अभिमान है तो ज्ञान हो ही नहीं सकता क्योंकि ज्ञान परमब्रह्म परमात्मा है और अभिमान प्रकृति जन्य है। वे ही प्रामब्रह्म परमात्मा नारायण है। सभी

देवताओं के माता-पिता का शास्त्रों में वर्णन है किन्तु नारायण के माता-पिता का वर्णन नही मिलता क्योंकि नारायण सर्वेश्वर जगत पिता है, वह नित्य और अनादि है। वही परमात्मा कृष्ण और राधा बनकर आते है। कृष्ण और राधा मे कोई अन्तर नहीं है। इसीलिए भागवत में कही राधा नाम का उल्लेख नहीं है । जहाँ-जहाँ कृष्ण शब्द है, वहां वहां वह राधा का बोध कराता है। कृष्ण और राधा एक रूप हैं।प्रकृति के वश में जो रहता हैं, वह जीव है, तथा प्रकृति को जो वस में रखता है, वह ईश्वर है।

दुनिया का सबसे विशाल ग्रन्थ महाभारत हैं और उस ग्रन्थ का रत्न श्रीमद्भगवद्गीता है। महर्षि व्यास ने कहा है कि जो महाभारत में है, वहीं सर्वत्र मिलता है, तथा जो इसमें नहीं है वह कहीं नहीं मिलता है। महाभारत का अध्ययन प्रत्येक घर में लोगों को करना चाहिए। उन्होंने "सबसे ऊंची प्रेम सगाई" भजन गाकर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। प्रेम की हमेशा विजय होती है। भक्त की हमेशा विजय होती है। महाभारत के युद्ध में पांडवों ने प्रेम व भक्ति के कारण ही विजय प्राप्त किया। सनातन धर्म ही राष्ट्र धर्म है और राष्ट्र धर्म ही सनातन धर्म है। सनातन सत्य है ,सत्य सनातन है, वही हिंदू है तथा वही हिंदुत्व भी है । भागवत में शुकदेव जी एक भी जगह सुदामा जी को दरिद्र शब्द से नहीं कहा। सुदामा भगवान के प्रिय मित्र होने के साथ ही वह परम विद्वान और ब्रह्मज्ञानी थे। वह दरिद्र कसे हो सकते है। भागवत में दरिद्र की परिभाषा बताई गई है कि जो सदा असंतुष्ट रहता है वही दरिद्र होता है ,जिसके अंदर संतोष नहीं है वही दरिद्र होता है। सुदामा जी तो परम संतोषी थे कभी कुछ भी चाह नहीं रखते थे । द्वारिका जाते समय भी उनको किसी और चीज की नहीं बस भगवान के दर्शन की इच्छा थी।

उन्होने 'सबसे ऊची प्रेम सगाई " भजन गाकर श्रोताओं को भाव- विभोर कर दिया। प्रेम की हमेशा विजय होती है, भक्ति की हमेशा विजय होती है।महाभारत के युद्ध में पाण्डवों ने प्रेम व भक्ति के कारण ही विजय प्राप्त किया। भगवान से कभी और कुछ मत भागो, अगर माँगना भी होतो केवल सद्बुद्धि माँगो । भगवान् से अगर और कुछ माँग लिये, तो धोखे में हो जाओगे। क्योंकि भगवान् कुछ न मांगने वाले को वो सब कुछ देते है, जिसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। भागवत मे वर्णन है जो कुछ मिला है उसे भगवान् की कृपा समझकर उपयोग करो, कभी मैं और मेरा की भावना मत रखो। कथा का समापन आरती एवं प्रसाद से हुआ संचालन डॉक्टर अरविंद कुमार चतुर्वेदी ने किया